CHAPTER 47

SANSKRIT

Doctoral Theses

436. उपाध्याय (सुनील कुमार)

गौडपादाचार्य-प्रणीत सुभगोदयम् का दार्शनिक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

Th 15422

सारांश

आचार्य गौडपाद के जीवन-वृत एवं उनकी रचनाओं की व्याख्या की गई है। सुभगोदय की विषयवस्तु का दिग्दर्शन प्रस्तुत किया गया है । इस ग्रंथ का प्रधान विषय कुण्डलिनी-उद्‌बोध है । सुभगोदय में उल्लिखित तंत्र सम्मत पच्चीसतत्त्वों का उल्लेख है । इन तत्त्वों के नाम हैं - पञ्चमहाभूत, पञ्चतन्मात्राएं, एकादश-इन्द्रियां, माया, विद्या, महेश्वर एवं शिव । कुण्डलिनी योग का विस्तार से परिचय प्रस्तुत है कुण्डलिनी स्वरूपतः विद्युत्कोटिनिभा, वह्निरूपधरा,प्रसुप्तभुजगाकारा, सार्द्धत्रिवलया कृति, मृणालतन्तुतनीयसी, जवासिन्दूरसंकाशा एवम् उद्यद्‌भास्करसन्निभा है । भगवती का भूर्जपत्रादि में यंत्र उल्लिखित करके पूजन करना बाह्यपूजन प्रधान कौलाचार है।

विषय सूची

1. गौडपाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व 2. सुभगोदय की विषय-वस्तु 3. सुभगोदय में पञ्चविंशति तत्त्वविवेचन 4. सुभगोदय में कुण्डलिनीयोग 5. सुभगोदय में वर्णित समयाचार, कौलाचार एवं श्रीविद्या । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

437. कुमार (राम प्रमोल)

प्रमुख संस्कृत नाट्य कृतियों में पूर्वरंगविधान ।

निर्देशक : डॉ. पी के पाण्डा

Th 15421

सारांश

भारतीय परम्परा में नाट्य-मंचन की सफलता हेतु पूर्वरंगविधान की परिकल्पना करके उसे यथार्थरूप दिया गया है । नाट्यमंच की सफलता के साथ-साथ अभिनेता अभिनेत्रियों एवं सामाजिकों के दुःख-शमन की कामना का मूल स्वरूप भी पूर्वरंगविधान प्रस्तुति के मूल में समाहित है । विभन्न विद्वानों ने अपने तरीके से पूर्वरंगविधान को परिभाषित करने की कोशिश की है तथा उसके उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न बतलाए हैं । सारे विन्दुओं के पूर्वरंगविधान-भूमिका, परिभाषा, उद्देश्य तथा प्रकारों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है ।

विषय सूची

1. पूर्वरंग भूमिका-व्युत्पति एवं विवेचना 2. भूमिका : नाटकीय तत्त्व 3. प्रमुख संस्कृत नाट्यकृतियों में पूर्वरंग विधान 4. प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक (भारतीय एवं पाश्चात्य) रंगविधानों का तुलनात्मक अध्ययन । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

438. गर्ग (वेदप्रकाश)

आनन्दगिरि विरचित वेदान्त तत्त्वालोक का समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. मदनमोहन अग्रवाल

Th 15475

सारांश

तत्त्वालोक अद्वैतवेदान्त का एक स्वल्पकाय ग्रन्थ होते हुए भी कोहिनूमणिसदृश अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इसकी लघुता, सिद्धान्तगरिमा, शिल्पसौन्दर्य व तर्कशीलता ने वेदान्त के जिज्ञासुओं को बहुत मुग्ध किया है । इसके अतगर्त वेदान्त के प्रमुख सिद्धान्तों का निरूपण एवं विवेचन जिस वैज्ञानिक व हृदयग्राही पद्धति से किया गया है यह अत्यन्त उपादेय है । तथा इसके रचनाकार आनन्दगिरी अपने नाम के अनुरूप सभी अद्वैतियों के लिए आनन्ददायक, प्रौढ़ वेदान्ती, प्रौढ़ व्याख्याकार, सुक्ष्मद्रष्टा, दार्शनिक व एक श्रेष्ठ आलोचक के रूप में प्रस्तुत होते हैं । उन्होंने आलोचक के रूप में न्याय वैशेषिक, सांख्य योग, पूर्वमीमांसा, चार्वाक-जैन-बौद्धादि

मतों के उपजीव्य सिद्धान्तों का गम्भीर व अद्वैतपरम्परानुसार खण्डन करके अद्वैतवेदान्त के शाश्वत सिद्धान्तों की स्थापना कर मानवजाति पर महनीय कृत्य संपादित किया है ।

विषय सूची

1. भूमिका । 2. तत्त्वमीमांसा । 3. प्रमाणमीमांसा । 4. आचारमीमांसा । 5. मोक्ष एवं उसके साधन । 6. परमतनिराकरण । 7. अद्वैत वेदान्त में आनन्दगिरी का योगदान । उपसंहार एवं ग्रन्थ सूची ।

439. जुनेजा (ललिता कुमारी)
योगवासिष्ठ में मुक्त का स्वरूप ।
निर्देशिका : डॉ. श्रीमती शकुन्तला पुञ्जानी
Th 15423

सारांश

शोध-प्रबंध में 'योगवासिष्ठ' नामक ग्रन्थ में 'मुक्त' के स्वरूप की, अन्य सभी दर्शनों में प्रतिपादित 'मुक्त' के स्वरूप से तुलना करते हुए, योगवासिष्ठ में प्रतिपादित 'मुक्त' की स्थापना करने का भरसक प्रयास किया गया है । योगवासिष्ठ का मुक्त, भ्गवद्गीता के 'स्थितप्रज्ञ' के बहुत कुछ समीप प्रतीत होता है । इस शोध-प्रबन्ध में सर्वप्रथम योगवासिष्ठ का परिचय, इसके रचनाकार तथा किस काल में यह ग्रन्थ लिखा गया, इसका विवेचन किया गया है । योवासिष्ठ का विषय-विवेचन तथा इसमें प्रतिपादित दार्शनिक सिद्धांतों का वर्णन है । योगवासिष्ठ में 'मुक्त'की अवधारणा तथा मुक्ति के उपायों व सोपानों का उल्लेख है । योगवासिष्ठ में मुक्त का स्वरूप तथा इसमे प्रतिपादित मुक्त के स्वरूप की अन्य दर्शनों के साथ तुलना करते हुए स्वमतस्थापन किया गया है योगवासिष्ठ में मुक्त प्राचीन तथा आधुनिक विद्वानों की मुक्त सम्बन्धी मान्यताओं का मिश्रण है तथा एक आदर्श मानव का प्रतिनिधित्व करता है आज के समस्या-प्रधान समाज में 'योगवासिष्ठ' का महत्त्व और भी बढ़ जाता हे क्योंकि 'मुक्त' होने के लिए जो जीवन-शैली बतायी गयी है, वह निश्चित रूप से आदर्श-समाज की रचना कर सकती है ।

विषय सूची

1. योगवासिष्ठ का संक्षिप्त परिचयए रचनाकर एवं समय 2. योगवासिष्ठ का विषय-विवेचन एवं दार्शनिक सिद्धान्त 3. योगवासिष्ठ में 'मुक्ति' की अवधारणा 4. योगवासिष्ठ में मुक्तिसाधना के उपाय एवं सोपान 5. योगवासिष्ठमें मुक्त का स्वरूप 6. योगवासिष्ठ में मुक्त के स्वरूप की अन्य दर्शनों में प्रतिपादित मुक्त-अवधारणाओं के साथ तुलना । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

440. झा (परमानन्द)

लघुमञ्जूषा में भाषिक अर्थ की अवधारणा एवं आधुनिक सन्दर्भ में उसकी उपयोगिता ।

निर्देशिका : प्रो. दीप्ति शर्मा त्रिपाठी

Th 15474

सारांश

मञ्जूषा अपने नाम के अनुरूप न केवल स्वपूर्ववर्ती समग्र अर्थसिद्धान्तों की तिजोरी सिद्ध हुई, प्रत्युत इसके अन्दर अनेक नूतन अर्थतात्त्विक आयाम भी नागेश ने जोडे । मञ्जूषा के बाद, विगत दो तीन शताब्दियों में भी अर्थपरक चिन्तन प्रक्रिया निरन्तर चलती ही रही और इस क्षेत्र की अनेक महत्त्वपूर्ण रचनायें भी सामने आयीं, यद्यपि उनका केन्द्रविन्दु उपर्युक्त कृतियाँ ही रही । इस प्रकार भारतीय भाषिक अर्थचिन्तन परम्परा, निरूक्तकार से लेकर मञ्जूषाकार तक अनवरत मौलिक गंभीर गवेषणाओं से उत्तरोत्तर समृद्ध होती रही है । पश्चिम में अर्थचिन्तन की शुरूआत दार्शनिकों की मौलिक श्रृंखला से हुई, किन्तु बाद में मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अर्थसम्बन्धी महत्त्चवपुर्ण गवेषण सामने आये है । इनके अतिरिक्त नृविज्ञान, समाजविज्ञान आदि क्षेत्रों में भी अथैचिन्तन प्रसंगत उपलब्ध होता है किन्तु उक्त चार धारायें प्रमुख है । इस प्रकार आज अनेक आधुनिक धारायें अर्थचिन्तन के क्षेत्र में सक्रिय रूप से नये नये आयामों को आत्मसात् कर रही है । फिर भी, अभी इनमें एक भी धारा अर्थतत्त्व के विश्लेषण की उस गहराई में जाने में समर्थ नहीं हो पायी है, जो नागेश समेत प्राच्य भारतीय भाषा चिन्तकों की सुप्राचीन परिपक्व परम्परा में उपलब्ध होती है ।

जिस प्रकार आधुनिक ध्वनिशास्त्र भारतीय शिक्षा एवं प्रातिशाख्य ग्रन्थों का ऋणी रहा है, उसी प्रकार अर्थ के सन्दर्भ में भी आज भारतीय प्राचीन सिद्धान्तों से प्ररेणा ग्रहण कर आधुनिक अर्थविज्ञान के अनुकूल नये सिद्धान्तों के विकास की आवश्यकता है । यह शोधप्रबन्ध, भट्टनागेश के लघुमञ्जूषा गत अर्थ सिद्धान्तों का इसी परिप्रेक्ष्य में परीक्षण करने का प्रयत्न है ।

विषय सूची

1. नागेशभट्ट का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं व्याकरणशास्त्र को अवदान । 2. लघुमञ्जूषा का परिचय एवं वैशिष्ट्य । 3. प्राचीन विविध शास्त्रों में अर्थविषयक चिन्तन । 4. लघुमञ्जूषा में प्रतिपादित अर्थ के विभिन्न पक्ष । 5. आधुनिक भाषिक चिन्तन में अर्थ पर विचार । 6. नागेश की अवधारणा का आधुनिक सन्दर्भ में उपयोग । प्रबन्धोपसंहार एवं परिशिष्ट ।

441. त्रिपाठी (धनञ्जय मणि)

भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र का अन्तःसम्बन्ध ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 15420

सारांश

धर्मशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र - दोनों का लक्ष्य मानव मात्र का कल्याण है । धर्मशास्त्र, आश्रम-वर्ण-संस्कार आदि के माध्यम से मानव जीवन को अनुशासित करता है, जिससे वर्तमान जीवन में सत्कर्म के प्रति प्रेरणा मिलती है, वहीं जातकशास्त्र मनुष्य के प्रारब्धानुसार वर्तमान जीवन के सुफल को बढ़ाने व कुफल को सीमित करने का उपाय बताता है । ज्योतिषशास्त्र के संहिताग्रंथों में भवन-दुर्ग, तालाब, जलाशय आदि का आस-पास रहने वाले लोगों के अनुकूल निर्माण करने का विधान है, जिससे उनका जीवन-यापन सुखपूर्वक हो और आत्मिक उत्थान हो। धर्मशास्त्रीय और राजनैतिक दृष्टि से भी राजप्रासादों आदि की संरचना ऐसी होनी चाहिए जो राजा-प्रजा के स्वास्थ्य के अनुकूल हो, दुर्ग आदि शत्रुओं से व बाह्य आक्रमणकारियों से सुरक्षित रहे जिससे राज्य में शान्ति और प्रजा खुशहाल रहे ।

विषय सूची

1. ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र का संक्षिप्त परिचय 2. धर्मशास्त्र में संस्कार और इनका ज्योतिषशास्त्र से अन्तःसम्बन्ध 3. धर्मशास्त्र में चारों वर्णों के कर्त्तव्य ओर उनका ज्योतिषशास्त्र से अन्तःसम्बन्ध 4. धर्मशास्त्र में चारों आश्रमी और इनका ज्योतिषशास्त्र से अन्तः सम्बन्ध 5. धर्मशास्त्र में राजधर्म तथा ज्योतिषशास्त्र से अन्तःसम्बन्ध । निष्कर्ष एवं उपसंहार । ग्रंथ सूची । परिशिष्ट ।

442. द्विवेदी (सुधीर कुमार)

शिङ्गभूपाल का संस्कृत काव्यशास्त्र को योगदान ।

निर्देशक : डॉ. प्रदीप्त कुमार पण्डा

Th 15424

सारांश

संस्कृत काव्यशास्त्र की परम्परा में शिंगभूपाल के योगदान का सम्यक् रूप से मूल्यांकन किया गया है । इनके ग्रंथों की रचना के उद्देश का ऊहापोह करते हुए शिंगभूपाल के काव्यशास्त्र को योगदान का समाकलन किया गया है चमत्कारचन्द्रिका, 'नाटक-चन्द्रिका' आदि परवर्ती ग्रंथों पर शिंगभूपाल को जो प्रभाव पड़ा उसका भी अंकन किया है ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. आचार्य शिंगभूपाल तथा उनका कर्तृत्व 3. नाट्य का स्वरूप 4. नाट्य के भेद (दशरूपक) 5. नेता (पात्र एवं चरित्र चित्रण) 6. रस-विमर्श 7. इतिवृत्त-विधान 8. प्रकीर्ण विषय । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

443. मिश्र (विनय कुमार)

अनुभूतिस्वरूपाचार्य का अद्वैतवेदान्त को योगदान : प्रकटार्थविवरण के संदर्भ में ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 15418

सारांश

शोध-प्रबन्ध में अद्वैत वेदान्त की परम्परा, वेदान्त शब्द के बहुविध अर्थ, अद्वैत वेदान्त का वेद से सम्बन्ध, अवच्छेदवाद, आभासवाद, प्रतिबिम्बवाद, परिणामवाद तथा विवर्तवादों, का समान्य परिचय, विवरणप्रस्थान एवं भामतीप्रस्थान की मान्यताओं का सारतः पचिय प्रस्तुत किया गया है । अद्वैत वेदान्त की परम्परा में आद्यशंकराचार्य से पूर्ववर्ती एवं उनके पश्चात्वर्ती अद्वैत आचार्यो का यथाप्राप्त परिचय दिया गया है । विवरणप्रस्थान की मान्यता है कि अविद्या का आश्रय जीव है तथा उसका विषय ब्रह्म है ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. अनुभूतिस्वरूपाचार्य का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व 3. तत्त्व-मीमांसा 4. प्रमाण-मीमांसा 5. आचार मीमांसा 6. मोक्ष के साधन 7. परमत निराकरण 8. अनुभूतिस्वरूपाचार्य का अद्वैत वेदान्त को योगदान । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची।

444. श्रीवास्तव (प्रगति रानी)

पञ्चमहाकाव्यों में धर्मशास्त्रीय तत्त्व ।

निर्देशक : डॉ. उर्मिला रुस्तगी एवं डॉ. राजेन्द्रनाथ शर्मा

Th 15419

सारांश

शोधग्रंथ का उद्देश्य प्रमुख महाकाव्यों में धर्मशास्त्रीय को सिद्ध करना था । यद्यपि सभी धर्मशास्त्रीय तत्वों को सिद्ध करने का प्रयास इस शोध ग्रंथ में किया है परन्तु अतिशय विस्तार होने के कारण अथवा किसी महाकाव्य विशेष में उस विषय का वर्णन न होने के कारण परित्याग करना पड़ा है फिर भी यथाशक्ति परिश्रम के द्वारा इस ग्रंथ को सुचारू एवं सर्वजन संवेद्य बनाने का प्रयास किया है । इस समस्त शोध के पश्चात् यही अनुभव है कि कालिदास के 'रघुवंश' में जिस विस्तृत रूप में धर्मशास्त्र के अधिकांश तत्वों का प्रयोग किया गया है उतना अन्य महाकाव्यों में नहीं किया गया, यहां तक कि उनके स्वयं के अन्य महाकाव्य 'कुमारसम्भव' में भी नहीं

है । धर्मशास्त्र के समस्त मानदण्ड रघुवंश में हैं इसका मुख्य कारण रघुवंश का लौकिक काव्य होना है कुमारसम्भव के पारलौकिक होने के कारण धर्मशास्त्र के अनेक तत्व इसमे विद्यमान नहीं है । जबकि शिशुपाल व नैषधीयचरित में भी सभी धर्मशास्त्रीय तत्वों का विवेचन उतना विस्तृत नहीं है जिता कि रघुवंश में है ं इसी प्रकार किरातार्जुनीयम् में राजधर्म तत्व की प्रधानता दृष्टिगत होती है ।

विषय सूची

1. महाकाव्य परम्परा - एक अनुचिंतन 2. धर्मशास्त्र का अभिप्राय 3. सृष्टि की उत्पत्ति 4. पञ्चमहाकाव्य-एक धर्मशास्त्रीय समीक्षा सामाजिक व्यवस्था 5. पञ्चमहाकाव्य-एक धर्मशास्त्रीय समीक्षा राजनीतिक व्यवस्था । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

M.Phil Dissertations

445. कमलेश रानी
श्रृंगार-प्रकाश में द्वादश-विध सम्बन्ध ।
निर्देशिका : डॉ. शारदा शर्मा

446. कुशवाहा (तेज प्रताप)
वक्रोक्ति की दृष्टि से मुद्राराक्षस का अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. गिरीश चन्द्र पंत

447. कौशिक (अर्चना)
संहिता स्कन्ध में प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणियाँ ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

448. जालान (रजनी)
जन्मकालीन नक्षत्र और उसके चरणों का जातक पर प्रभाव ।
निर्देशक : डॉ. देवेन्द्र मिश्र एवं पं. रामदेव झा

449. नूती कुमारी
फलितशास्त्र में शिक्षा विचार ।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

450. पाण्डेय (आभा)
मणिकण का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. मदनमोहन अग्रवाल

451. सिंह (प्रमोद कुमार)
श्री हरिराय विरचिता तर्कचन्द्रिका का अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

452. मानिक (सत्यजीत)
फलित-शास्त्र में सुदर्शन चक्र की महत्ता ।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

453. मिश्रा (ओम नारायण)
नेपाल के प्रमुख मंदिरों का वास्तु-विन्यास ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. देवीप्रसाद त्रिपाठी

454. रावत (कमला)
भाग्य-कर्म-लाभ भावों के ग्रह स्थिति जन्य शुभाशुभ योगविचार ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

455. रीना
भोज एवं मम्मट के गुण विषयक अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

456. शर्मा (ज्योति)
भारतीय ज्योतिष शास्त्र में गोचर विमर्श ।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

457. शर्मा (तृप्ति)
भावकुतूहलम् में ग्रहों की अवस्था विचार ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं आचार्य रामदेव झा

458. सुनील कुमार
वाक्यपदीय में प्रमाण विचार ।
निर्देशक : डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

459. हेमलता
वाल्मीकि-रामायण के सुन्दरकाण्ड में काव्य-सौन्दर्य ।
निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला पुत्रजानी